-धरती-

संपादक
शैलेन्द्र चौहान

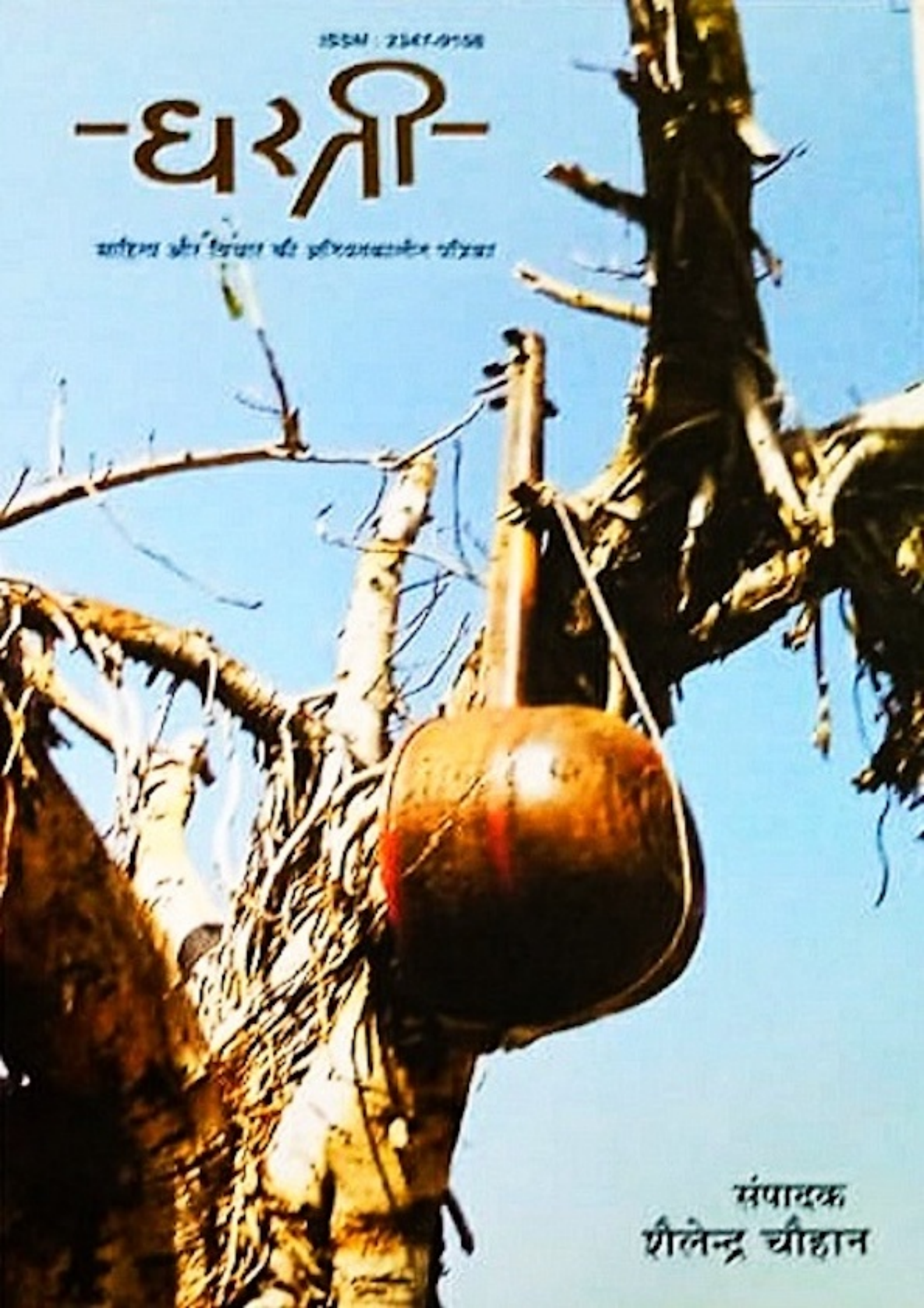

ISSN : 2347-9108

जून 2023 ● अंक : 20

कथेतर गद्य अंक

धरती

साहित्य और विचार की अनियतकालीन पत्रिका

संपादक

शैलेन्द्र चौहान

संपादकीय कार्यालय

34/242, सेक्टर-3

प्रतापनगर, जयपुर-302033

ई-मेल : dharati.aniyatkalik@gmail.com

मोबाइल : 7838897877

प्रकाशक

श्रीमती मीना सिंह

34/242, प्रतापनगर, जयपुर-302033

आवरण चित्र

बंसीलाल परमार

पत्रिका प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि कृपया निम्न खाते में जमा कराएँ-

खाताधारक का नाम Shailendra Singh Chauhan

खाता संख्या -1226226979

बैंक- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

ब्रांच-गोपालपुरा सर्किल

महावीर नगर जयपुर-302018

IFSC : CBIN 0283093

UPI माध्यम से मोबाईल नं. 7838897877 पर भेजें

मूल्य

इस अंक का मूल्य : 125/-रुपये

तीन प्रति : 300 रुपये

डाक खर्च : 50 रुपये

मुद्रण

प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स ए-21, झिलमिल इंड. एरिया, जी.टी. रोड, दिल्ली-95

'धरती' में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचारों से संपादक और प्रकाशक की वैचारिक सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

1. संप्रेषण / 3
2. स्मरण/ रनवीर सिंह/ राघवेन्द्र रावत / 11
3. गद्य के अन्य रूप/ रामस्वरूप चतुर्वेदी / 18
4. राहुल सांकृत्यायन/ गुणाकर मुले / 23
5. डीडी कोसाम्बी/ के एन पणिक्कर / 29
6. निबंधकार बेनीपुरी/ बलभद्र /36
7. बेनीपुरी के शब्दचित्र/ सुमन कुमार सिंह / 50
8. पर मुक्तिबोध ऐसा था/ हरिशंकर परसाई / 61
9. शैलेश मटियानी/ प्रकाश मनु /67
10. मुद्राराक्षस/ विनोद दास /88
11. ज्ञानरंजन/ सूरज पालीवाल / 102
12. जोसेफ मेकवान/ नरसिंह प्रसाद शर्मा /116
13. मैंने अपने पिता को कभी हारते नहीं देखा/ नवारुण भट्टाचार्य / अनुवादः मीता दास / 136
14. चारु मजूमदार/ राजेंद्र प्रसाद सिंह / 139
15. दिशाहीन रचना जीवन और प्रकृति का निषेध है/ कुबेर कुमावत / 153
16. सहरियों के बीच/ रमेश चंद्र मीणा / 162
17. जयपुर एक गुलाबी स्मृति/ गोविंद माथुर / 176
18. पढ़ने के लिए पढ़ना/ राकेश भारतीय / 187
19. जहाँ मेरी भाषा की जड़ें मौजूद हैं/ बालकृष्ण काबरा / 192
20. कोचिंग इंस्टिट्यूट/ डॉ. मोहम्मद इमरान / 198
21. भगत सिंह / 219
22. निबंध/ बबूल/ अस्मुरारीनंदन मिश्र / 222
23. प्रतिक्रियाएं / 227

संप्रेषण

हिंदी साहित्य में सर्वाधिक लिखी जाने वाली विधा कविता है। फिर कहानी का नंबर आता है जिसमें उपन्यास भी शामिल हैं। व्यंग्य भी लिखे जाते हैं, नाटक भी और आत्मकथ्य भी। निबंध, संस्मरण, यात्रा वृतांत, रेखाचित्र, डायरी आदि कम देखने में आते हैं। इन कथेतर विधाओं पर बात भी अत्यल्प होती है। जबकि ये रोचक और ज्ञानवर्धक विधाएं हैं। इनका संज्ञान लिया जाना चाहिए। इनकी चर्चा और मूल्यांकन होना चाहिए। आज के समय में इनका प्रभाव क्षेत्र विस्तृत होने की पर्याप्त संभावनाएं हैं। आज का पाठक साहित्य की प्रचलित विधाओं से इतर कुछ पढ़ना चाहता है। इसलिए हमारा दायित्व है कि इनकी जानकारी हिंदी साहित्य के पाठकों तक पहुंचाई जाए।

संस्मरण :

स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण कहलाता है। यात्रा साहित्य भी इसके अन्तर्गत आता है। संस्मरण को साहित्यिक निबन्ध की एक प्रवृत्ति भी माना जा सकता है। ऐसी रचनाओं को 'संस्मरणात्मक निबंध' कहा जा सकता है। व्यापक रूप से संस्मरण आत्मचरित के अन्तर्गत लिया जा सकता है। किन्तु संस्मरण और आत्मचरित के दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है। आत्मचरित के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवनकथा का वर्णन करना होता है। इसमें कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है। संस्मरण लेखक का दृष्टिकोण भिन्न रहता है। संस्मरण में लेखक जो कुछ स्वयं देखता है और स्वयं अनुभव करता है उसी का चित्रण करता है। लेखक की स्वयं की अनुभूतियाँ तथा संवेदनाएं संस्मरण में अन्तर्निहित रहती हैं। इस दृष्टि से संस्मरण का लेखक निबन्धकार के अधिक निकट है। वह अपने चारों ओर के जीवन का वर्णन करता है। इतिहासकार के समान वह